ईकाई : 2

भगवद्गीता का दर्शन

Syllabus : कर्मयोग (अनासक्त कर्म), स्वधर्म, लोकसंग्रह।

2.कर्मयोग

- भारतीय वाङगमय का अत्यंत विलक्षण ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता नीतिशास्त्र का सर्वमान्य श्रेष्ठ ग्रंथ है। इसमें मानव कर्मों से जुड़ी विविध समस्याओं की समीक्षा के साथ निष्काम कर्म को नैतिक कर्तव्य के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।
- भगवान कृष्ण स्वयं अपने उपदेश को योग नाम से अभिहित करते हैं तथा इस शास्त्र के अनुसार जो आदर्श पुरूष होते हैं वह योगी (स्थितप्रज्ञ) कहलाता है।
- योग शब्द 'युज्ज्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'मिलना'। आशय है कि जीवात्मा का परमात्मा से तादात्म या उसको एकाकार हो जाना ही योग है।
- योग की उपलब्धि अर्थात योगी बनने के लिए गीता में कई मार्ग की प्रस्तावना की गई है जिसे योगमार्ग कहते हैं जैसे ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग आदि। मनुष्य अपनी मनोवैज्ञानिक क्षमता के अनुसार किसी भी मार्ग का चयन कर सकता है।
- मानसिक रूप से क्रिया प्रधान व्यक्ति के लिए भगवद्प्राप्ति हेतु कर्ममार्ग (प्रवृतिमार्ग) ही कर्मयोग है। यहाँ कर्म या प्रवृत्ति का आशय कर्तव्य से और कर्तव्य का आशय स्वधर्म से है। स्वधर्म का आशय है अपना धर्म (स्वभावगत धर्म) एवं अपना कर्तव्य (वर्णधर्म)।
- अपने–अपने स्वाभाविक कर्म में लगे रहने से अर्थात स्वधर्म का पालन फलाकांक्षारित होकर करने से मनुष्य भगवद्प्राप्ति रूपी परमसिद्धि (योग) को उपलब्ध होता है।
- वस्तुतः समत्वबुद्धि से कुशलतापूर्वक स्वधर्म का सम्पादन ही कर्मयोग है।
- कर्मयोग के प्रवक्ता श्री बाल गंगाधर तिलक है। वे योग की व्याख्या कर्मपरक करते हैं, जिसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार है–
    1. योगः कर्मशु कौशलम्– कर्म से भागना नहीं बल्कि कुशलतापूर्वक कर्त्तव्यों (स्वधर्म) का पालन ही योग है।
    2. योगस्थः कुरू कर्माणि– योग में स्थित होकर अर्थात समत्व बुद्धि से कर्म करना चाहिए।
    3. संग त्यक्त्वा– कर्म में संग यानी आसाक्ति त्यागकर अर्थात फलांकांक्षारहित होकर कर्म करना चाहिए।
    4. आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद भी कर्म से संयास नहीं लेनी चाहिए। यह गीता के उपदेश के अनुकूल नहीं है स्वयं श्रीकृष्ण अहर्निश कर्म में लगे हुए है।
    5. योगी को ईश्वर का स्मरण करते हुए लोककल्याण हेतु तन्मयता से कर्म में लगे रहना चाहिए अन्यथा सामान्यजन उसका अनुकरण कर निष्क्रिय हो जाऐगें और विश्व का नाश हो जाएगा।

6. कर्मयोग में ज्ञानयोग सम्मिलित है, ज्ञान के बिना कर्मयोग फलित नहीं हो सकता।

- वस्तुतः जीवन के प्रति समस्त चिन्तन को दो ही भागों में बॉटा जा सकता है। जिसे करने पर भरोसा है वह कर्मयोगी और जिसे करने में नहीं केवल जाननें में रूचि है वह ज्ञानयोगी।
- कर्मयोगी कर्म को सतोगुणी चेतना से सम्पादित करता है फलतः योगी का कर्म यज्ञ कर्म होता है। यज्ञ का अर्थ त्यागपूर्ण कर्म से है। कर्मयोगी अनेक कर्म करता हुआ भी अकर्ता बना रहता है फलतः उसके कर्म अकर्म होते है। यज्ञ कर्म का फल भी मिलता है परंतु वह फल उसे दिव्यता की ओर ले जाता है, बन्धन मे नहीं।

HEMCHANDRA